जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

जालोर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 16 संख्याः 234 प्रभात जालोर, बुधवार 1 दिसम्बर, 2021 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2019-21 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

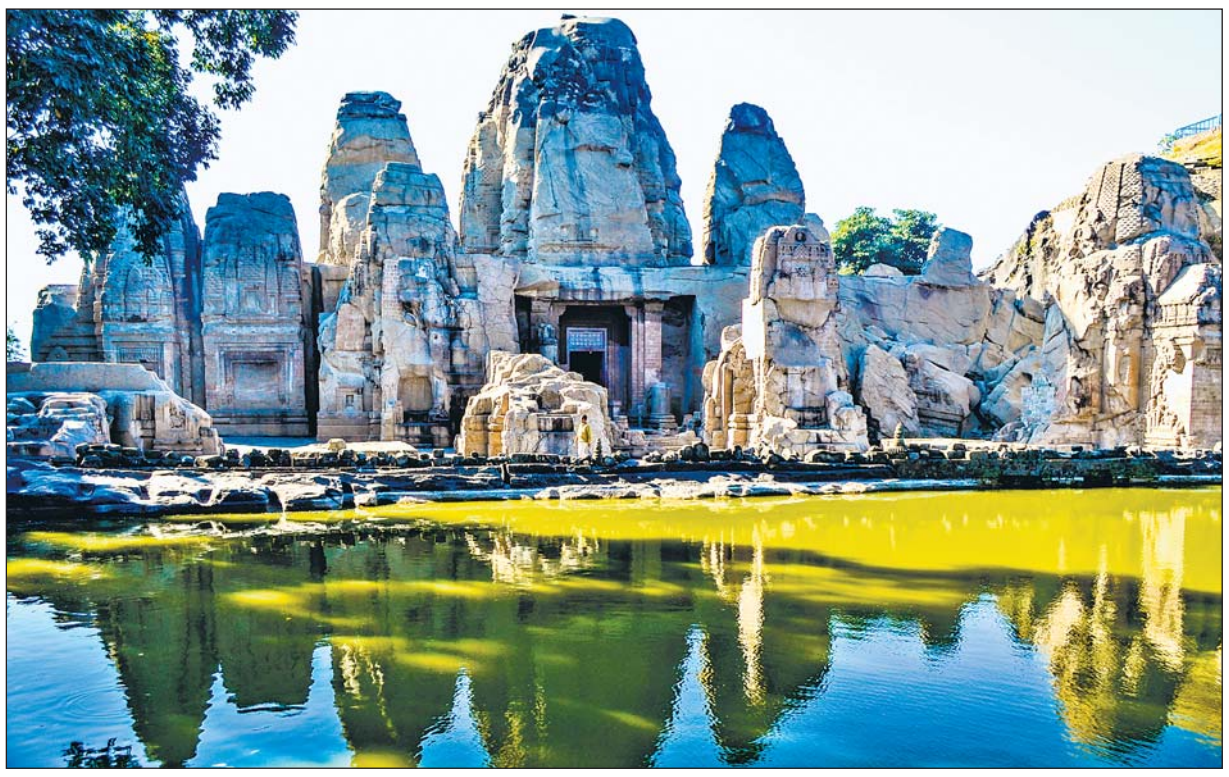

भारत के चार विख्यात रॉक कट टैम्पल्स में से एक हैं मसरुर रॉक कट टैम्पल्स, जो नगर शैली में निर्मित हैं। इन्हें हिमाचल प्रदेश का एलोरा या हिमालयन पिरामिड भी कहा जाता। हालांकि ये टैम्पल्स सबसे बड़े हैं पर इनके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है और यहां कम ही लोग ही आते हैं। समुद्र स्तर से 2500 मीटर की ऊंचाई पर एक पहाड़ी पर बने इस मंदिर समूह में 15 मोनोलिथिक रॉक कट टैम्पल्स हैं, जो संभवतया 8वीं -9वीं सदी ईस्वी के बीच में बने थे। समझा जाता है कि ये नगर शैली स्थापत्य के सबसे पुराने उदाहरणों में से एक हैं। ज्ञातव्य है कि नगर शैली का स्थापत्य उत्तरी भारत में हिमालय से विंध्याचल पर्वत श्रृंखला के बीच मिलता है। यहां मंडल पैटर्न में मुख्य मंदिर के चारों तरफ कई छोटे -छोटे मंदिर हैं। मंदिर के गर्भ गृह के चार प्रवेश द्वार हैं। इनमें से पूर्वी द्वार पूरी तरह बना हुआ है, उत्तर व दक्षिण के द्वार आंशिक तौर पर तथा पश्चिमी द्वार अपूर्ण है। पूर्वी द्वार पर एक विशाल मंडप और प्रवेश मार्ग भी था, जो 1905 के कांगड़ा भूकम्प में नष्ट हो गया। इस मंदिर की एक और प्रमुख विशेषता यह है कि, पूर्व की तरफ मंदिर के सामने एक पवित्र सरोवर है। कहते हैं कि यह 8 वीं सदी में बना था। वर्ष भर यह सरोवर पानी से भरा रहता है। स्थानीय किवदंतियों के अनुसार पाण्डवों ने अपने निर्वासन का लम्बा अर्सा यहां बिताया था और इस दौरान उन्होंने इस स्थान पर एक ही दिन में, सुबह होने तक स्वर्ग तक की सीढ़ी बनाने के निर्णय लिया। इससे इन्द्र भयभीत हो गए और कौवा बनकर सुबह होने से पहले ही कांव -कांव करने लगे। पाण्डवों को लगा सुबह हो गई और उन्होंने काम रोक दिया। इस प्रकार सीढ़ी अधूरी रह गई। एक अन्य किवदंती के अनुसार समूचा परिसर एक रात में ही बना था और सुबह हो जाने के कारण काम बंद कर दिया गया, इसलिए परिसर के कुछ मंदिर अधूरे रह गए। मसरुर रॉक कट टैम्पल्स का उत्खनन यशोवर्मन के काल में हुआ था, उसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है, पर माना जाता है कि वह समय नगर शैली स्थापत्य की शुरुआत का था।

महासचिव वेणुगोपाल के खिलाफ कांग्रेस की केरल इकाई में भारी असंतोष?

कांग्रेस के पुराने नेता ओमान चांडी व रमेश चेनिनथाला ने सोनिया गांधी व राहुल को इस संदर्भ में पत्र लिखा

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 नवम्बर। कांग्रेस पार्टी की केरल इकाई में ए.आई.सी.सी. प्रभारी महासचिव (संगठन) के.सी. वेणुगोपाल के खिलाफ एक बड़ा विद्रोह सुलग रहा है।

सूत्र बताते हैं कि कई नेताओं ने राहुल और सोनिया को केरल में पार्टी की स्थिति का विस्तृत वर्णन करते हुए लिखा है कि विचार-विमर्श नहीं किए जा रहे हैं और अधिकांश नेताओं को निर्णय प्रक्रिया से दूर रखा जा रहा है।

ज्ञात हुआ है कि सीनियर नेता ओमन चाण्डी और रमेश चैनिनतला विपक्ष के नेता वी.डी. सतीशन और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के. सुधाकरण की कार्यशैली के विरोध में सोनिया और राहुल को लिख रहे हैं। सतीशन और सुधाकरण, दोनों ही के.सी. वेणुगोपाल खेमे के हैं।

- **कांग्रेस के केरल में वरिष्ठ व पुराने कांग्रेसी नेताओं की शिकायत है कि, कांग्रेस संगठन आदि के फैसले लेते वक्त उनसे राय-मशविरा नहीं किया जाता और न ही ''डिसीज़न मेकिंग'' में कोई भूमिका दी जाती है।**
- **इन नेताओं ने विधानसभा में पार्टी के नेता सतीशन व प्रदेशाध्यक्ष सुधाकरण के खिलाफ काफी असंतोष व्यक्त किया। दोनों नेताओं को वेणुगोपाल का संरक्षण प्राप्त होना बताया जाता है।**
- **चांडी व चेनिनथाला सहित कई वरिष्ठ नेताओं ने चेतावनी भी दी कि, अगर हाई कमान ने उनकी बात नहीं सुनी तो, वे जी-23 से जुड़ सकते हैं।**

केरल में कांग्रेस की गुटबाजी चरम पर है और पार्टी दो भागों में विभाजित है। वेणुगोपाल राजस्थान से राज्यसभा सांसद हैं और इसका श्रेय राहुल गांधी को जाात है। इससे पहले हुए संकट के दौरान वेणुगोपाल ने ताल ठोक दी थी और उन्हें एक सर्वानुमति से मुख्यमंत्री पद का प्रत्याशी बनने की उम्मीद थी, लेकिन कांग्रेस राज्य में बहुमत प्राप्त करने में विफल रही और वाम मोर्चे की सरकार राज्य में फिर से सत्ता में आई।

ऐसी ही अटकल है कि ओमन चाण्डी और रमेश चैनिनतला यहां कांग्रेस की कार्यशैली से इतने ऊब गए हैं कि वे जी-23 के समर्थन में जा सकते हैं।

ए.आई.सी.सी. में ऐसी अटकलें चल रही हैं कि राहुल गांधी वेणुगोपाल के पर कतरने और उन्हें संगठन, महासचिव जैसे पद से हटाने के जबर्दस्त दबाव में है क्योंकि संगठन महासचिव के पद को पार्टी में कांग्रेस अध्यक्ष के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण पद माना जाता है।

इस वास्तविकता के बावजूद कि वेणुगोपाल के खिलाफ विविध राज्यों और कांग्रेसियों की कई शिकायतें हैं, राहुल को महत्वपूर्ण मौकों पर उनके समर्थक के रूप में जाना गया।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तृणमूल एक साल में 15 राज्यों में अपनी इकाई स्थापित करेगी

इस संदर्भ में तृणमूल अपनी पार्टी के संविधान में संशोधन भी करेगी, इन नयी इकाइयों के नेताओं को पार्टी की ''वर्किंग कमेटी'' में सदस्य बनाने के लिये

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 नवम्बर। सभी संकेत बता रहे हैं कि तृणमूल कांग्रेस (टी.एम.सी.) नेता ममता बनर्जी के विस्तार-अभियान में कोई कमी नहीं आयेगी। एक साल की अवधि में 15 राज्यों में पार्टी-इकाई स्थापित करने की योजनाओं को अंतिम रुप दे दिया गया है।

टी.एम.सी. ने पार्टी संविधान में संशोधन करने का भी निर्णय लिया है, ताकि अन्य राज्यों के नेताओं को पार्टी की वर्किंग कमेटी में समायोजित किया जा सके।

ऐसी संभावना है कि पार्टी-संविधान में किये जाने वाले परिवर्तनों एवं संशोधनों पर टी.एम.सी. की कार्य समिति की मीटिंग में चर्चा होगी। यह मीटिंग ममता की मुम्बई के दौरे से लौटने के बाद आयोजित की जायेगी।

- **जैसा कि विदित ही है, ममता बनर्जी दो दिवसीय यात्रा पर हैं, महाराष्ट्र में पवार, आदित्य ठाकरे आदि नेताओं के अलावा जाने-माने शायर जावेद अख्तर व अटल बिहारी वाजपेयी के मीडिया सलाहकार सुधीन्द्र कुलकर्णी से भी मुलाकात करेंगी।**
- **महाराष्ट्र में उद्योगपतियों व व्यापारियों से भी मुलाकात करेंगी, बंगाल में उद्योगों में पूंजी निवेश करवाने के लिये तथा कोलकाता में अप्रेल में आयोजित बंगाल ग्लोबल बिज़नैस सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित भी करेंगी।**

मुम्बई दो दिन के प्रवास में ममता एन.सी.पी. प्रमुख शरद पवार तथा महाराष्ट्र के मंत्री आदित्य ठाकरे से भेंट करेंगी। इसके अलावा, वे बहुत सारे आयोजनों में शामिल होंगी, जिनमें उद्योगपतियों के साथ होने वाली कॉन्फ्रेंस भी शामिल है। वे ''यंग प्रैसिडेन्ट्स ऑर्गनाइजेशन'', जो अमेरिका का एक वैश्विक नेतृत्व संगठन है, के द्वारा आयोजित उद्योगपतियों की एक कॉन्फ्रेंस को संबोधित करेंगी। बंगाल के लिये निवेश प्राप्त करने की कोशिश में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी अगले वर्ष अप्रैल में कोलकाता में आयोजित होने वाली ''बंगाल ग्लोबल बिजनैस सम्मिट'' के लिये उद्योगपतियों को आमंत्रित भी करेंगी।

ममता महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री से भेंट नहीं करेंगी। ज्ञातव्य है कि वे एक सर्जरी के उपरान्त, अस्पताल में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं तथा डॉक्टरों ने उन्हें आइसोलेशन की सलाह दी है।

उल्लेखनीय है कि बनर्जी, गीतकार जावेद अख्तर तथा पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के मीडिया सलाहकार सुधीन्द्र कुलकर्णी से भी भेंट कर सकती हैं। बनर्जी की पिछली दिल्ली-यात्रा के दौरान, कुलकर्णी और अख्तर दोनों ही उनसे मिले थे तथा ऐसी अफवाहें एवं चर्चाएं हैं कि वे तृणमूल में शामिल भी हो सकते हैं।

टी.एम.सी. की वर्किंग कमेटी की मीटिंग में, जो सम्भवत: नई दिल्ली में होगी, पार्टी-संविधान में किये जाने वाले बदलावों पर चर्चा होगी, ताकि मणिपुर, असम, त्रिपुरा, गोवा, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, बिहार तथा तमिलनाडु सहित अन्य राज्यों के नेताओं को वर्किंग कमेटी में जगह दी जा सके। बनर्जी ने पार्टी में शामिल होने वाले नये नेताओं को पार्टी के विभिन्न पदों पर नियुक्ति देना शुरु कर दिया है। उन्होंने अभी हाल ही चार्ल्स पिन्हरोप को पार्टी की मेघालय इकाई का अध्यक्ष नियुक्त किया है। ऐसी संभावना है कि सुष्मिता देव को त्रिपुरा एवं असम की पार्टी इकाई का अध्यक्ष पद स्वीकार करने के लिये कहा जा सकता है।

पत्रकारों ने संसद तक पैदल मार्च किया

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 नवम्बर। प्रैस के वैधानिक पास रखने वाले पत्रकारों तक को प्रवेश से इन्कार कर मीडिया कवरेज पर एक तरह से प्रतिबंध लगाने के खिलाफ राजधानी के विविध मीडिया संगठनों ने गुरूवार को संसद तक मार्च निकालने का निर्णय लिया है।

- **पत्रकारों ने, संसद की कार्यवाही कवर करने के लिये वरिष्ठ पत्रकारों को प्रवेश न देने के प्रति भी विरोध व्यक्त किया।**

ये संगठन पसंदीदा पत्रकारों के चयन की नीति, पत्रकारों के एक चयनित समूह को पास जारी करने और संसद के सैन्ट्रल हॉल में सीनियर पत्रकारों के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबंध लगाए जाने का विरोध करेंगे। पत्रकारों को लामबंद करने वाले संगठनों में एडिटर्स गिल्ड ऑफ इण्डिया, प्रैस क्लब ऑफ इण्डिया, दिल्ली पत्रकार संघ और प्रैस एसोसिएशन शामिल है।

इनके नेताओं का कहना है कि सरकार संसद लोकसभा और राज्यसभा प्रशासन पर दबाव डाल रही है संसद भवन में पत्रकारों की मौजूदगी न्यूनतम

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सांभर में 13 दिनों में 85 पक्षियों की मौत की पुष्टि हुई

18 नवम्बर को 23 कौवों के शव मिलने के बाद उठाये गये प्रभावी कदम के बाद पक्षियों के मौत के आंकड़ों में कमी जरूर आ रही है

सांभरझील, 30 नवम्बर (निसं)। सांभर कस्बे में पिछले तेरह दिनों में बर्ड फ्लू से अभी तक 85 पक्षियों की मौत की सरकार की ओर से पुष्टि की गयी है।

18 नवम्बर को एक ही दिन में सर्वाधिक 23 कौवों के शव मिलने के बाद उठाये गये प्रभावी कदम के बाद लगातार पक्षियों के मौत के आंकड़ों में कमी जरूरी आ रही है, लेकिन रोजाना दो से तीन पक्षियों के शव व उनके घायल अवस्था में पाये जाने का सिलसिला बदस्तूर जारी है।

- **लेकिन रोजाना दो से तीन पक्षियों के शव व उनके घायल अवस्था में पाये जाने का सिलसिला बदस्तूर बना हुआ है।**
- **मंगलवार को एक कौवा, एक इंडियन कोयल व एक बुलबुल का शव मिला।**

कौवों के अलावा विभिन्न प्रजातियों के पक्षियों की अधिक संख्या में हो रही मौतों में जबरदस्त गिरावट आने के बाद वन व पशुपालन विभाग के अफसरों ने भी राहत की सांस ली है। कौवों की मृत्यु का कारण एच-5 एन-1 एवियन इंफ्लूंजा वायरस होने तथा इस वायरस के संक्रमण को इंसानों में जाने से रोकने के लिये सरकार की ओर से उक्त दोनों विभागों के अलावा स्वास्थ्य विभाग को खास सतर्कता बरतने के निर्देश प्रदान किये गये थे, उसी अनुरूप सभी विभागों के अधिकारियों व उनकी टीम की ओर से विशेष नजर रखी जा रही है।

डीएफओ वीरसिंह ओला व एएफओ ओमप्रकाश गुप्ता से बात करने पर बताया गया कि सांभर कस्बे के अलावा झील परिक्षेत्र में हमारी टीम को पहले ही तैनात किया जा चुका है उनकी ओर से लगातार काम किया जा रहा है। अभी तक 85 पक्षियों की मौत हुयी है, लेकिन उसके बाद हालात पर काबू पा लिया गया है। पशुपालन विभाग के एडिशनल डायरेक्टर उम्मेद सिंह व डिप्टी डायरेक्टर पदमचन्द कानखेड़िया ने बताया कि सरकार की ओर से जो गाईडलाइन जारी की गयी है उसी अनुरूप पूरा ध्यान रखा जा रहा है।

मृत पक्षियों को सुरक्षित व वैज्ञानिक तरीके से दफनाया जा रहा है ताकि किसी भी प्रकार के संक्रमण को फैलने से रोका जा सके। वाल्डलाइफ क्रिएचर ऑर्गेनाइजेशन के अध्यक्ष ओमप्रकाश पिण्टी व उनकी टीम की ओर से भी इस काम में मदद की जा रही है। वन विभाग की काचरोदा नर्सरी में तैनात श्यामश्री शर्मा ने बताया कि मंगलवार को 1 कौवे, 1 इंडियन कोयल व 1 बुलबुल के शव मिले तथा 1 कोयल व 1 घायल कौवे का उपचार

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

निलंबित सांसद सत्र के अंत तक धरना देंगे

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 नवम्बर। संसद के पूरे शीतकालीन सत्र से निलम्बित कर दिये गये विपक्ष के 12 सांसद, निलम्बन से राहत न मिलने पर शीतकालीन सत्र की समाप्ति, अर्थात् 23 दिसम्बर तक संसद-परिसर में स्थापित महात्मा गांधी की मूर्ति के नीचे रोजाना धरना देंगे।

मंगलवार को, विपक्ष ने राज्यसभा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **विपक्ष ने खड़गे के कक्ष में आयोजित बैठक में पूरे सत्र का बायकॉट करने के निर्णय को सही नहीं माना व अस्वीकार किया। पर निलंबित सांसद राज्यसभा के सभापति को पत्र लिखकर निलंबन की प्रक्रिया में खामियाँ उजागर करेंगे व निलंबन में ''पिक एण्ड चूज़'' का सिद्धांत अपनाए जाने का विरोध करेंगे।**

संयुक्त किसान मोर्चा चुनाव नहीं लड़ेगा

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 नवम्बर। दिल्ली की सीमाओं पर किसानों के आंदोलन का नेतृत्व कर रहे ''संयुक्त किसान मोर्चा'' (एस.के.एम.) ने मंगलवार को स्पष्ट कर दिया कि उसने ''कहीं भी किसी भी चुनाव में'' अपना कोई उम्मीदवार खड़ा नहीं किया है। मोर्चा ने जनता से अपील की कि लोग ऐसे किसी भी व्यक्ति द्वारा गुमराह नहीं हों, जो स्वयं के एस.के.एम. का उम्मीदवार होने का दावा करे।

एस.के.एम. ने कहा कि यह स्पष्टीकरण इसलिये आवश्यक था क्योंकि राजस्थान के स्थानीय चुनावों में, कुछ उम्मीदवार यह दावा कर रहे हैं कि वे एस.के.एम. का प्रतिनिधित्व कर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **मोर्चे ने जनता को आगाह किया कि, मोर्चा किसी चुनाव में कोई भी उम्मीदवार खड़ा नहीं करेगा, अतः वे गुमराह न हों, अगर कोई प्रत्याशी मोर्चे का उम्मीदवार होने का दावा करे।**

'19 विधायकों के जाने के बाद सरकार को बचाने वाले व सरकार का साथ देने वाले विधायकों को शिकायत नहीं होने दूंगा'

मुख्यमंत्री ने एक और मंत्रिमण्डल फेरबदल के संकेत देकर बसपा से आये व निर्दलीय विधायकों को सांत्वना दी

जयपुर, 30 नवम्बर (का.प्र.)। कांग्रेस में माना जा रहा था कि मंत्रिमंडल पुनर्गठन के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा, लेकिन ऐसा होता नहीं दिख रहा है। पहले जहां विधायक और मंत्रियों में ही नाराजगी नजर आ रही थी, वहीं अब तो मुख्यमंत्री के 2 बयानों के बाद लग रहा है कि वे खुद भी इस पुनर्गठन से संतुष्ट नहीं हैं। यही कारण है कि मुख्यमंत्री ने शपथ ग्रहण वाले दिन और अपना साथ देने वाले विधायकों के दर्द को मंगलवार को भी दोहराया और संकेत दिए कि राजस्थान में चार-पांच महीने बाद एक बार फिर से मंत्रिमंडल फेरबदल होगा।

मंगलवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में प्रदेश प्रभारी अजय माकन और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा सहित कई मंत्री और विधायकों की मौजूदगी में जब 12 दिसंबर को दिल्ली में होने वाली रैली की तैयारियों की बैठक थी,तब मुख्यमंत्री ने एक बार फिर कहा कि जब 19 विधायक छोड़ कर चले गए थे, उस समय यदि बसपा से कांग्रेस में आए विधायक और निर्दलीय साथ नहीं देते तो सरकार को बचाना मुश्किल हो जाता। ऐसे में उनको नहीं भूला जा सकता। इसी के साथ मुख्यमंत्री ने कहा कि आलाकमान से फिर इजाजत लेंगे और एक बार फिर मंत्रिमंडल में लोगों को जगह देंगे। साथ देने वाले विधायकों को शिकायत नहीं होने देंगे।

- **मूल प्रश्न है, क्या मुख्यमंत्री मंत्रिमण्डल में हाल ही में हुए फेरबदल से संतुष्ट नहीं हैं। क्योंकि वे जिन विधायकों को मंत्री बनाना चाहते थे, उनको नहीं बना सके।**

उल्लेखनीय है कि जिस दिन राजस्थान में शपथ ग्रहण समारोह था, उससे पहले जब प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में मंत्रियों के स्वागत का कार्यक्रम था, तब मुख्यमंत्री ने अपने भाषण में इस बात को दोहराया था कि 34 दिन तक होटलों में हमारे साथ रहने वाले विधायकों को नहीं भुलाया जा सकता। यानी कि कहीं ना कहीं हाल ही हुए मंत्रिमंडल पुनर्गठन को लेकर मुख्यमंत्री संतुष्ट नहीं है, क्योंकि वे जिन विधायकों को मंत्री बनाना चाहते थे, उनको नहीं बना सके।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि मुख्यमंत्री मंत्रीमंडल के अलावा विधायकों को अपना सलाहकार बनाकर मंत्री पद का दर्जा देने की बात सोच रहे थे, और कुछ विधायकों को संसदीय सचिव बनाए जाने की तैयारी थी, लेकिन पोस्ट प्रॉफिट का मामला आने के कारण जहां सलाहकारों को अब मुख्यमंत्री कोई दर्जा या सुविधाएं नहीं दे पा रहे हैं। वहीं संसदीय सचिवों के मामले में भी नियुक्ति तो की जा सकती है लेकिन उन्हें भी मंत्री पद का दर्जा या सुविधाएं नहीं दी जा सकती।

अत: जिन विधायकों को मंत्री पद नहीं मिलने के बाद दूसरी जगह समायोजित होने की उम्मीद थी, वह पूरी होती नजर नहीं आ रही है। कहा यह भी जा रहा है कि अब राजनीतिक नियुक्तियों में कुछ विधायकों को एडजस्ट करने के लिए मुख्यमंत्री प्रयासरत है।

वहीं कुल 39 जिला कांग्रेस अध्यक्षों की नियुक्ति में भी आधे से ज्यादा जिलों में विधायकों को मौका दिए जाने की तैयारी की जा रही है, ताकि उन्हें संतुष्ट किया जा सके।